

शनि चालीसा

जय गणेश गरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल ।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ नहिल ॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु वनिय महाराज ।
करहु कृपा हे रवतिनय, राखहु जन की लाज ॥

जयति जयति शनिदेव दयाला । करत सदा भक्तन प्रतपिला ॥
चारि भुजा, तनु श्याम वरिजै । माथे रतन मुकुट छवि छाजै ॥
परम वशाल मनोहर भाला । टेढी दृष्टि भृकुट विकिराला ॥
कृण्डल श्रवन चमाचम चमके । हयि माल मुक्तन मर्णा दमकै ॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा । पल बचि करै अरहि सिंहारा ॥
पगिल, कृष्णो, छाया, नन्दन । यम, कोणस्थ, रौद्र, दुःख भंजन ॥
सौरी, मन्द शनी दश नामा । भानु पुत्र पूजहि सब कामा ॥
जापर प्रभु प्रसन्न हवै जाही । रंकहुं राव करै कृष्ण माही ॥
पर्वतहू तृण होइ नहिरत । तृणहू को पर्वत करि डारत ॥
राज मलित वन रामहि दीन्हयो । कैकेइहुं की मति हरि लीन्हयो ॥
वनहुं में मृग कपट दखाई । मातु जानकी गई चुराई ॥
लषणहि शक्ति विकिल करडारा । मचगिा दल में हाहाकारा ॥
रावण की गति मति बौराई । रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ॥
दयो कीट करि कंचन लंका । बजि बजरंग बीर की डंका ॥
नृप विक्रम पर तुहि पिगु धारा । चतिर मयूर नगिला गै हारा ॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी । हाथ पैर डरवायो तोरी ॥
भारी दशा नकिष्ट दखायो । तेलहि घर कोलहू चलवायो ॥
वनिय राग दीपक महँ कीन्हयो । तब प्रसन्न प्रभु हवै सुख दीन्हयो ॥
हरश्चिन्द्र नृप नारि बिकानी । आपहुं भरे डोम घर पानी ॥
तैसे नल पर दशा सरिनी । भूंजी-मीन कूद गई पानी ॥
श्री शंकरहि गिहयो जब जाई । पारवती को सती कराई ॥
तनकि विकिलोकत ही करि सीसा । नभ उड़ि गितो गौरसित सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी । बची द्रोपदी होत उधारी ॥
कौरव के भी गति मति भारयो । युद्ध महाभारत करि डारयो ॥
रवि कहँ मुख महँ धरि तत्काला । लेकर कूद पिरयो पाताला ॥
शेष देव-लखा वनिती लाई । रवि को मुख ते दयो छुड़ाई ॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना । जग दगिगज गर्दभ मृग स्वाना ॥
जम्बुक सहि आदि निख धारी । सो फल ज्योतिषि कहत पुकारी ॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं । हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं ॥
गर्दभ हानि करै बहु काजा । सहि सदिधकर राज समाजा ॥
जम्बुक बुद्धि निष्ट कर डारै । मृग दे कष्ट प्राण संहारै ॥
जब आवहि स्वान सवारी । चोरी आदि होय डर भारी ॥
तैसहि चारि चरण यह नामा । स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा ॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं । धन जन सम्पत्ति निष्ट करावैं ॥
समता ताम्र रजत शुभकारी । स्वर्ण सर्वसुख मंगल भारी ॥
जो यह शनि चरतिर नति गावैं । कबहुं न दशा नकिष्ट सतावैं ॥
अद्भुत नाथ दखावैं लीला । करै शत्रु के नश बिलि ढीला ॥
जो पण्डति सुयोग्य बुलवाई । वधिवित शनि ग्रह शांति कराई ॥
पीपल जल शनि देविस चढावत । दीप दान दै बहु सुख पावत ॥
कहत राम सुन्दर पर

पाठ शनशिचर देव को, की हों वमिल तैयार ।
करत पाठ चालीस दनि, हो भवसागर पार ॥